भौतिक प्रगति के
सुनिश्चित आधार

श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI SANDIPBHAI PATEL,
MOHADEL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भौतिक प्रगति के सुनिश्चित आधार

वृक्षों की ऊँचाई, चौड़ाई और जिन्दगी इस बात पर निर्भर है कि उसकी जड़ें कितनी मजबूत एवं गहरी हैं। उस पर लगने वाले फल फूल आसमान से उतर कर नहीं लद पड़ते वरन् उस रस संचय पर अवलम्बित रहते हैं जो जड़ों द्वारा भूमि से खींचा जाता है। दृश्यमान वैभव अदृश्य जड़ों की सक्षमता पर निर्भर रहता है।

मनुष्य को भी एक वृक्ष माना जाय तो गुण, कर्म, स्वभाव के अदृश्य समुच्चय को वे जड़ें कहा जा सकता है जो बाहरी वैभव के रूप में दृष्टिगोचर होता है। इसलिए पत्तों को सींचने की अपेक्षा जड़ों को उपयुक्त खाद पानी मिलता रहे इसका प्रबन्ध किया जाना चाहिए।

एक जैसी परिस्थितियों में उत्पन्न दो व्यक्तियों का भविष्य एक जैसा नहीं होता। मनःस्थिति के अनुरूप वे अपनी-अपनी स्वतन्त्र दिशायें पकड़ते हैं। साधनों का उपयोग एक उत्कर्ष के लिए करता है दूसरा अपकर्ष के लिए। इसलिए उनका भविष्य एक दूसरे से सर्वथा भिन्न होता है। एक सम्मान और वैभव का धनी होता है। दूसरा पूर्वजों की सम्पदा की होली जलाकर बदले में दरिद्रता और भर्त्सना का भागी बनता है। इसमें यों परिस्थितियों की, व्यक्तियों की, भाग्य रेखाओं की सराहना या शिकायत की जाती है, पर इससे आत्म वंचना के अतिरिक्त और कुछ हाथ नहीं लगता। वस्तुतः मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है और यह कार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वह अपने गुण, कर्म, स्वभाव जैसे उपकरणों और कौशलों के सहारे सम्पन्न करता है ।

लोगों का ध्यान बाहरी परिस्थितियों, साधनों और अनुग्रहों की ओर रहता है और वे सोचते हैं कि इन्हीं की अनुकूलता पर प्रगति के अवसर निर्भर हैं पर वस्तुतः ऐसा है नहीं। अदृश्य गुण सम्पदा का महत्व है। उन्ही का चुम्बकत्व अपने अनुरूप साधन और सहयोग घसीट लाता है । गड्ढा होने पर उसके समीप जाने वाले गिरेंगे ही और पर्वत की चोटी पर निगाह रखने वालों का उत्साह ऊँचा चढ़ने के लिए प्रेरित करता है। चोटी और खाई की प्रशंसा निन्दा करना व्यर्थ है। वे तो सृष्टि संरचना के अंग भर हैं। उनमें किसी को खींचने और उछालने की सामर्थ्य नहीं है। यह कार्य तो अपना मानसिक स्तर ही करता है ।

भौतिक प्रगति अभीष्ट तो हर किसी को है पर वह हस्तगत उन्हीं को होती है जो उसे उपलब्ध करने के लिए समुचित मूल्य चुकाने के लिए तत्पर रहते और तैयारी करते हैं । यह तैयारी मात्र योजना बनाने और साधन एकत्रित करने तक सीमित नहीं है। वरन् उसके लिए वह करना पड़ता है जो अत्यधिक महत्वपूर्ण है, भले ही उसकी आवश्यकता और महत्ता कोई समझ पाये या नहीं। तात्पर्य उन सदगुणों की सम्पदा से है जो अपने अनुरूप चुपके-चुपके ताना-बाना बुनती रहती है। वृक्ष का वैभव उसकी जड़ों पर निर्भर रहता है इस उपमा को यहाँ पूरी तरह लागू किया जा सकता है ।

प्रगति प्रयोजन के लिए दृश्यमान गुणों में सर्व प्रमुख उठने से लेकर सोने तक के समय का उद्देश्य पूर्ण नियोजन है । यह कार्य रात को सोते समय अगले दिन के लिए अथवा प्रात काल उठते ही अपना कार्यक्रम निर्धारित करने के लिए नियोजित करना चाहिए । किसी आकस्मिक कार्य के आ खड़े होने पर ही यदा कदा अपवाद स्वरूप उसमें परिवर्तन होने की बात क्षम्य हो सकती है । अन्यथा मनमर्जी या दूसरों के सुझाये काम अस्त व्यस्त रूप से करते रहना और उन्हें आधे अधूरे छोड़कर दूसरा कुछ करने लगना बाल विनोद ही कहा जा सकता है। बन्दर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रायः ऐसी ही बेसिलसिले की उछल कूद करते रहते है । जिन्हें किसी लक्ष्य तक पहुँचना है उन्हें इस दुर्गुण से अपने आप को बचाने के लिए पूरा पूरा प्रयत्न करना चाहिए ।

निर्धारित कार्यक्रम में पूरी तत्परता और तन्मयता से जुटना चाहिए । शारीरिक काम में उत्साह और साथ में मनोयोग की गहराई का नियोजन ; यही है वह रहस्य जो काम में ऊब, उच्चाटन उत्पन्न नहीं होने देता, वरन् उसे बढ़िया किस्म का खेल समझ कर पूरा पूरा रस लेता है । उचित समय में उचित रीति से, उचित मात्रा में काम कर सकना तभी बन पड़ता है जब उसे अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया जाय । इस प्रवृत्ति में कमी रहेगी तो अधूरे मन और अधूरे श्रम से किये हुये काम फुड्डों जैसे आधे अधूरे काने कुबड़े रहेंगे । उन पर लोग तो हँसेंगे ही स्वयम् को भी असंतोष होगा । सफल जीवन का प्रथम गुण इसीलिए क्रमबद्ध कार्य पद्धति अपनाना और उसमें पूरी तरह निमग्न हो जाना बताया गया है । प्रत्येक सफल व्यक्ति को यह प्रक्रिया अनिवार्यतः अपनानी पड़ी है ।

दूसरा गुण है साहस और उत्साह बनाये रहना । इसके अभाव में भीतर का शक्ति स्रोत सूखता है और बाहर अनुत्साह, आलस्य, प्रमाद और भटकाव घेरता है । आत्म विश्वास ऊँचे दर्जे का गुण है । सफल होकर रहने की उमंगें मनुष्य को वस्तुतः इस योग्य बनाती हैं कि वह कल नहीं परसों लक्ष्य तक पहुँचा कर ही रहती है । जो बबूले की तरह उछलते और झाग की तरह बैठते हैं, उनका मन चचल, अस्थिर और अवसाद ग्रस्त देखा जा सकता है । अनेक सुयोगों के रहते यह एक ही दुर्गुण ऐसा है जो अभीष्ट की पूर्ति में हजार व्यवधान खड़ा कर देता है ।

आत्म विश्वास की, दृढ़ निश्चय की, प्रामाणिक चरित्र की बहिरंग पहचान एक ही है होठों पर मंद मुस्कान और आँखों में आशा की चमक । सफल जीवन जीने वाले कभी भी निराश, उदास, गभीर-विचारमग्न असमंजस ग्रस्त नहीं देखे गये । इन व्यथाओं को अपनाने वाला बात-बात में आवेश ग्रस्त होने लगता है । यह व्यक्तित्व

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की कुल्पना है जो कायिक सुन्दरता और परिधानों की शोभा सज्जा को धूलि में मिला देती है और किसी के सम्पर्क में आने, मन की बात पूछने या सहयोग करने की हिम्मत नहीं पड़ती। इसलिए आवश्यक है कि हर किसी को अपनी वरिष्ठता का विश्वास दिलाने वाली होठों की मुस्कान और आंखों में आशा की चमक उत्पन्न करने का प्रयत्न करें। यदि यह अब तक अभ्यास में नहीं आया है तो उसे दर्पण की सहायता से वैसा अभिनय करने की साधना करनी चाहिए। कोई भी देख सकता है कि उदासी के रहते चेहरा कितना कुरूप दीखता है और अक्षमता का कितना विज्ञापन करता है? इसके विपरीत खिले फूल सा चेहरा कितना सुन्दर लगता है और कितनी तितलियों और मधुमक्खियों पर अपना आश्रय पाने के लिए आमंत्रित करता है।

एकांगी उत्साह प्रायः ऐसी भूलें करता है जिनके कारण अगले ही दिनों हौसला टूट जाय। हमें अपने कार्य के हर पक्ष पर विचार करना चाहिए। सभावना पर भी और व्यवधान पर भी। आशा रखें पर कठिनाईयों से निपटने की भी योजना बनाकर रखें। आवश्यक नहीं कि अपनी कल्पना के अनुरूप ही सब कुछ घटित होता चला जाय या जिन व्यक्तियों से जो आशा रखी है वह पूरी होती ही चली जाय। आवश्यक नहीं कि परिस्थितियाँ अनुकूल ही बनी रहें। इसलिए सतर्कता रखना और तथ्यों के दोनों पहलू समझना आवश्यक है। समझदारी बढ़ाने का यही तरीका है। और सफलता की मंजिल तक पहुँचने के लिए सामयिक हेरा फेरी की सूझ-बूझ रखकर चढ़पाना सम्भव होता है। अन्यथा भावुक व्यक्ति सरलतापूर्वक बह सकता और अपना धैर्य गवाँ बैठ सकता है।

स्मरण रखने योग्य बात यह है कि यह समूचा मानव समाज एक दूसरे के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। यहाँ कोई मात्र एकाकी पुरुषार्थ के सहारे नहीं बढ़ सका है। हर छोटे बड़े कामों में दूसरों के स्नेह सहयोग की आवश्यकता पड़ती है। इसे अर्जित करने का तरीका आदान प्रदान है हम देते हैं और पाते हैं। शुरुआत अपनी ओर से होनी चाहिए। इस प्रतीक्षा में नहीं बैठा रहना चाहिए कि हम किसी के लिए कुछ न करें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और लोग हमारे ऊपर अकारण ही स्नेह सहयोग बरसाते रहें । इसके लिए मधुर वचन बोलने की व्यवहार में शिष्टाचार के निर्वाह की आवश्यकता है । साथ ही यह भी आवश्यक है कि सम्मान दें और सहयोग करें । इसमें आवश्यक नहीं कि किसी पर थैली ही उड़ेल दी जाय । जब मिलना हो छुट-पुट कार्यों में हाथ बंटाना खुशी और रंज में सम्मिलित होना और अपने योग्य सेवा की बात पूछना । यह भी सहयोग का एक बड़ा तरीका है । पर छोटा वह है जिसमें कोई बड़ा खर्च नहीं करना पड़ता और बहुत सहयोग नहीं देना पड़ता पर दूसरे के हिस्से के काम में अपना हाथ लगा देना इतने से भी काम चलता है । कदाचित किसी को आकस्मिक विपत्ति में फंस जाना पड़े तो उसे भी यथा सम्भव सहायता करना ऐसा तरीका है जिससे कितनों को अपना बनाया जा सकता है और उनके योगदान से समयानुसार अपने प्रगति कार्यों में अयाचित सहयोग प्राप्त किया जा सकता है । इसके लिए अपनी आवश्यकता का संकेत कर देने भर से उन्हें प्रत्युपकार की बात स्मरण हो आती है । मित्र बनाना, उपेक्षित रहना और सहयोग अर्जित करना यह तीनों स्थितियां अपनी उदारता नम्रता और व्यवहार कुशलता पर निर्भर हैं । इस दिशा में प्रयत्नरत रहने का स्वभाव ही बना लेना अच्छा है ।

सम्मान, सद्भाव प्राप्त करने की इच्छा तो सभी की रहती है । और इसके लिए अपनी विशेषताओं का ढिंढोरा पीटने के लिए लोग प्रयत्न भी करते रहते हैं । पर यह अस्थिर और उथला तरीका है । ठोस और वास्तविक तरीका है अपनी प्रामाणिकता की छाप दूसरों के मन पर बिठा देना । यह प्रपंचों का विषय नहीं, वरन् सीधा वास्तविकता से सम्बन्धित है । यह एक दिन में नहीं लम्बे समय तक उच्च चिन्तन और आदर्श कर्तृत्व अपनाने से ही सम्भव है । लोग प्रतिभा के आधार पर जितने प्रभावित होते हैं उसकी तुलना में मनुष्य की ईमानदारी, सज्जनता, शालीनता के प्रसंगों का यथार्थ परिचय प्राप्त कर अधिक प्रभावित होते हैं । अनेकों उसे आसानी से प्राप्त भी कर लेते हैं । हमारी भीतरी और बाहरी दुश्चरित्रता को पैरों तले की जमीन ऊपर का आसमान देखते हैं और हवा के साथ उस वास्तविकता को समूचे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वातावरण में बिखेर देता है। फलतः वह विश्वास के रूप में न सही आशंका के रूप में हर किसी के मन में जा बैठता है। अप्रामाणिक पर कोई विश्वास नहीं करता और संदेह हर किसी को बना रहता है कि ऐसी ही कुटिलता धूर्तता से कहीं हमें भी हानि न पहुँचा बैठे। ऐसे लोग सीधे रास्ते प्रगति तो कर ही नहीं पाते। उल्टे रास्ते पर कर भी लें तो वह अधिक देर टिकती नहीं। विभूतियों को अर्जित करना जितना कठिन है उससे कहीं अधिक कठिन उन्हें सुरक्षित रख सकना है। सम्पदा हो या प्रतिभा उन्हें सुरक्षित रख सकना हर किसी के बल बूते की बात नहीं हैं। इसके लिए चरित्रवान होना नितांत आवश्यक है। जो उच्च आदर्शों और सिद्धान्तों को जीवनचर्या में मिलाकर नहीं चलता वह मुखौटा भर ओढ़ता है। वह बहुत देर तक अपनी कलाई उतरने से बच नहीं सकता।

प्रगति का एक उपाय है मितव्ययिता। मितव्ययिता का अर्थ कंजूसी या कृपणता नहीं वरन् यह है कि जिसके निमित्त जितना आवश्यक है उतना ही खर्च किया जाय। समय, श्रम, चिन्तन और धन चारों सम्बन्ध में ही मितव्ययिता की बात लागू होती है। इसमें से एक भी सम्पदा को खुले हाथ नहीं लुटाया जाना चाहिए। फिजूल खर्ची एक बुरी आदत है जिसे लोग अमीरी का प्रदर्शन और ठाठ बाट का चका चौंध उत्पन्न करने में उठाते रहते हैं। चापलूस मित्र भी धमकी देने वाले शत्रु की तरह बचने योग्य होते हैं। वे गप बाजी, आवारागर्दी और शौक के लिए इतना समय और धन खर्च करा लेते हैं कि उस कारण प्रगति प्रयासों में भारी बाधा पड़े। पेंदे में छेद हो जाने पर नाव डूबती है। और फिजूल खर्ची की आदत वाले को देर सवेरे दिवालिया बनना पड़ता है। इतना ही नहीं उसकी प्रगति का मूल्य चुकाने के लिए जो करना चाहिए उसके संदर्भ में भी वह खाली हाथ रह जाता है।

सद्गुणों से सुव्यवस्था का अत्यधिक महत्व है। व्यवसाय की, सार्वजनिक क्षेत्र की, निजी जीवन की, परिवार की सुव्यवस्था मन को हल्का और प्रसन्न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रखती है और साधनों तथा साथियों को सही रखना उपयोगी बनाना सफल होता है। संसार में जितने महत्वपूर्ण काम हुए हैं उनमें प्रत्यक्षतः सुयोग्य साथियों, श्रमिकों एवम् साधनों का महत्व दृष्टि गोचर होता है। पर परोक्षतः उसे व्यवहार कुशलता का चमत्कार दिखाते देखा जाता है, जिसे सुव्यवस्था कहा जाता है। हानि लाभ के जितने प्रसंग हैं उसमें अस्त व्यस्तता का अभिशाप अथवा सुव्यवस्था का वरदान ही काम करते दीखता है। जो शतरंज की तरह अपनी गोटें यथा स्थान फिट करता रहता है, उसे सूत्र संचालक कहते हैं प्रबन्धक, मैनेजर आदि भी। यह योग्यता संसार की अन्यान्य योग्यताओं की तुलना में सैकड़ों गुनी अधिक महत्वपूर्ण हैं। व्यवस्था बुद्धि को विकसित करने के लिए व्यक्तिगत क्षमताओं का सुनियोजन करना चाहिए। इसके लिए परिवार की प्रयोग शाला अभ्यास के लिए सर्वसुलभ और सर्वोत्तम है। अच्छा है परिवार को छोटा रखा जाय और जो सदस्य अपने से बँधे हैं उनमें से प्रत्येक के दृष्टिकोण और क्रिया कलाप को गुण, कर्म, स्वभाव की दिशा धारा को सुनियोजित करते रहने में दत्तचित्त रहा जाय जिससे अपनी प्रसन्नता बढ़े और उनको सही राह मिलने का सन्तोष रहे।

यह मौलिक और आरम्भिक गुणों की चर्चा है। इससे कम में भौतिक प्रगति का तारतम्य बनता नहीं। यदि यही सद्गुण उलटकर दुर्गुण बन जाय तो समझना चाहिए कि घड़े में अनेक छेद हो गये हैं और उसमें भरा हुआ आकांक्षाओं एवं प्रयत्नों का सारा जल बिखर जायगा। प्रगतिशीलों को ऐसा अवसर नहीं ही आने देना चाहिए। यही वे सूत्र हैं जो भौतिक और आत्मिक प्रगति की पृष्ठभूमि बनाते हैं एवं किसी को भी ऊँचा उठाकर कहीं से कहीं पहुँचा देते हैं।

❋

क्रमाङ्क–२५२। युगान्तर चेतना प्रेस, शान्ति कुञ्ज हरिद्वार। मूल्य-४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org